। कुत्ता ।।लघु कथा

आचार्य–लाल साहेब आपने खबर सुनी क्या ।
लाल साहेब–कौन सी खबर आचार्य जी ।
आचार्य–नेहरू नगर में एक कुत्ता पच्चास लोगो को काट लिया ।
लाल साहेब–आचार्य जी बस पच्चास ।
आचार्य जी–लाल साहेब कैसी बात कर रहे हो। एक कुत्ता पच्चास को काट लिया । आप खुशी मना रहे हो।
आचार्य जी–मैं बहुत दुखी हूं ।मैं कोई हनुमान नही हूं कि छाती फाडकर दिखा दूं।आपको मालूम हैं वह कुत्ता पागल था । एक बात और आपको बता दूं कुत्ता के काटने का इलाज है । आज का आदमी जो होशो हवास में हजारो आदमियो को काट रहा हैं उसका कोई इलाज है ।
आचार्य जी–नही ।सचमुच बहुत जहरीला हो गया है आदमी आज का । नन्दलाल भारती

।। एडस ।।लघु कथा

भ्रष्टाचारी, ठग बेइमान,दंगाबाज किस्म के लोग कामयाबी पर जश्न मनाने में लगे रहते हैं ।कर्मठ,परिश्रमी नेक लोग आंसू से रोटी गीली करते रहते हैं।जबकि जगजाहिर है कि दंगाबाजी से खडी की गयी दौलत की मीनार ज्वालामुखी हैं। मेहनत सच्चाई से कमाई गये चन्द सिक्के भी चांद की शीतलता देते है ।सकून की नींद देते है। कहते हुए बाबा शनिदेव धम्म से टूटी काठ की कुर्सी में समा गये ।
जगदेव–बाबा दगाबाज लोग पूरी कायनात के लिये अपशकुन हो गये है।बाबा ये दगाबाज बेईमान मुखौटाधारी आदमियत के विरोधी लोग समाज और देश की तरक्की की राह में एडस हो गये है ।
शनिदेव–बेटा वक्त गवाह हैं दगाबाज खुद की जिन्दा लाश ढो ढो कर थका है । खुद के आंसू की दरिया में डूब मरा है । जमाना दगाबाजो के मुंह पर थूका हैं ओर थूकेगा भी । नन्दलाल भारती

।। उपदेश ।।लघु कथा

बकसर बाबू ठगी बेइमानी अमानुपता का पर्याय बन चुका हैं ।उपदेश तो ऐसे देता हैं जैसे कोई सदाचारी । क्या लोग हो गये हैं ।मन में राम बगल में छुरी कहते हुए कुमार बाबू माथा पकड कर बैठ गये ।
अवतार बाबू–आजकल तो ऐसे लोगो का ही जमाना हैं ।बकसर बाबू जब किसी बडे आदमी की चौखट पर माथा टेक कर आता हैं तो और भी अधिक चटखारे लेकर उपदेश देता हैं जैसे सामने वाला नासमझ हो ।सब जानते हैं बकसर बाबू की काली करतूत को ।वह अमानुप नेक बनने का ढोग करता है ।जनता सब जानती है।
कुमार बाबू–काश बकसर बाबू जैसे ठग ढोगी अमानुप किस्म के लोगो की शिनाख्त कर जनता बहिष्कार कर देती ।इसी में समाज संस्था और देश का हित है । नन्दलाल भारती

।। गुमान ।।लघु कथा

गुलामदीन बीडी का कश खीचते हुए केशव बाबू से बोला बाबूं हम गरीब हाडफोड कर मुश्किल से चूल्हा गरम कर पा रहे हैं । दूसरी ओर कुछ लोग धन के पहाड जोडते जा रहे है ।क्या हम भय भूख और जाति धर्म की लकीरो पर तडपते मरते रहेगे ।ये कैसी आजादी हैं ।
केशव बाबू–हमारा देश अंग्रेजी हुकुमत से आजाद हो गया है ।तुम भी तरक्की करोगे ।
गुलामदीन–कब केशव बाबू । भ्रष्टाचारियों की ना कभी भूख मिटेगी ना हमारी तरक्की होगी । काश हम भी सामाजिक और आर्थिक रूप से तरक्की कर पाते आजाद देश में ।
केशव बाबू–गुलामदीन तुमको नही लगता कि तुम आजाद हो ।
गुलामदीन–बाबू जिस दिन हम दीन दुखियों की गली से तरक्की होकर गुजरेगी तब हम असली आजादी महसूस करेगे ।बाबू देश की आजादी पर गुमान हैं । तभी तो भय भूख जातिधर्मवाद से पीडित तरक्की से दूर होकर भी आजाद देश की आजाद हवा पीकर अभिमान के साथ बसर कर रहा हूं ।

नन्दलाल भारती

।। ये इण्डिया है।।लघु कथा

जीवित बूढी लाश परिजनो के लिये बेकार की चीज होने लगी है ।वही परिजन जो कभी आश्रित थे मेहनत मजदूरी खून पसीने की कमाई का सुखभोग कर रहे थे कहते हुए महेश दादा रोने लगे ।
सुबोध–क्यो आंसू बहा रहे होदादा क्या हो गया ।
महेश दादा–सुबोध की तरफ अखबार सरकाते हुए बोले ये खबर पढो बेटा ।
सुबोध–दादा सचमुच चिन्ता की बात है । बेचारे बूढे अमेरिका के राबिंसन माइकल फांर्ब्स लेह में आकर मर गये ।भला हो भारतीय सैनिको का जिन्होने अमेरिकी दूतावास के जरिये मरने की खबर भेजवायी और लाश को सम्मान के साथ रखे ।राबिंसन माइकल फांर्ब्स के परिजनों ने लाश लेने को मना कर दिया यह कह कर कि लाश का हम क्या करेगे ।
महेश दादा–बेटा राबिंसन माइकल फांर्ब्स के साथ जो हुआ हैं हम सरीखे बूढो के साथ हो गया तो ।
सुबोध–दादा बाजारवाद ने रिश्ते को तहस नहस करना तो शुरू कर दिया है ।दादा भारतीय रिश्ते की डोर इतनी कमजोर नही है ।यहां तो मांता पिता धरती के भगवान सरीखे पूजे जाते है। वो अमेरिका है ये इण्डिया है। दादा इण्डिया की नींव सदभावना, आस्था एवं नैतिक मूल्यो पर टिकी है।
महेश दादा–अरे वाह बेटा तुमने तो मेरी चिन्ता का बोझ उतार दिया कहते हुए मंद मंद मुस्कराने लगे ।

नन्दलाल भारती

दुर्व्यवहार/लघु कथा

धौंसचन्द साहेब अपने अधीनस्थ प्रतिष्ठित कमल बाबू को डपटते हुए बोले कमल तुम्हारा आचरण ठीक नही हैं दफतर में आने जाने वालों से दुर्व्यवहार करते हैं । कमल बाबू को काटो तो खून नहीं । कमल बाबू खुद की समीक्षा करने में जुट गये । आखिरकार कमल बाबू को वजह यह मिली की वे कल ठगेन्द्र,चपरासी को काम करने के लिये बोले थे यह जानकर भी कि चपरासी साहब का आदमी है यही कमल बाबू का दुर्वव्यहार साबित हो गया धौंसचन्द साहेब की निगाहों में ।

नन्दलाल भारती

// हिट्लर //लघु कथा

अल्पशिक्षित,निम्न पद चम्मचागीरी के शिखर से उच्चपद हासिल करने वाला बढिया काम करने वाले कर्मचारियों को प्रताडित करें तो क्या इसे हिट्लरगीरी नही कहेगे राजू आंख मसलते हुए धीरज बाबू बोले ।
राजू–बाबू यही लोग तो सत्ता का सुख भोग रहे है नीचे से उपर तक ।गरीब कोल्हू के बैल सा खट रहा है ।चाहे दफतर हो या जमीदारों का खेत ।सच कहा है किसी ने कमायें धोती वाले बेचारे खायें टोपी वाले ।
धीरज बाबू –राजू तुम्हारे साहेब भी तो ऐसे ही हिट्लर है ।
राजू–हां बाबू तभी तो आंसू पीकर काम करना पड रहा हैं पारिवारिक दायित्व निभाने के लिये । ऐसे हिट्लर के साथ दिन दुखते सालों की तरह बितता है ।
धीरज बाबू–राजू ये उंची पहुंच वाले सबल लोग गरीबों की तकदीर पर कुण्डली मारे बैठे हैं सदियों से ।इन हिट्लरों के आतंक से निपटने के लिये हिट्लर ही बनना होगा ।
राजू–हां बाबू ठीक कह रहे हो तभी गरीबों का उध्दार होगा ।

नन्दलाल भारती